

किसान – संवाद

क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर में खरीफ मौसम में सब्जियों की उन्नत खेती

खरीफ मौसम में अधिक वर्षा, एवं वातावरण में नमी के कारण सब्जियों में रोग-कीटों के प्रकोप के समाधान के लिए अच्छी गुणवत्ता एवं अधिक उत्पादन के लिए उन्नत किस्मों, उचित जल निकास, संतुलित पोषण तथा समय पर रोग-कीट प्रबंधन पर ध्यान देने योग्य बातें-

1. प्रजातियों का चयन -

- भिंडी
- बैंगन
- मिर्च
- टमाटर
- लौकी
- कद्दू
- करेला
- खीरा
- तोरई
- परवल
- लोबिया
- अरबी

2. खेत एवं मिट्टी की तैयारी

- खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था करें, ताकि अधिक वर्षा का पानी खेत में जमा न हो।
- अच्छी जल निकास वाली उपजाऊ दोमट मिट्टी सब्जियों की खेती के लिए उपयुक्त होती है।
- खेत की तैयारी के समय अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट का प्रयोग करें।
- मृदा परीक्षण के आधार पर संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करना अधिक लाभदायक होता है।

3. बुवाई एवं रोपाई

- सब्जी के बीज एवं पौध को उचित समय पर बुवाई या रोपाई करें। अन्यथा उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- पौधों से पौध की बीच उचित दूरी रखें, जिससे पौधों को पर्याप्त प्रकाश एवं हवा मिल सके।
- बहुत अधिक घनी बुवाई/रोपाई से बचें।
- बेल वाली सब्जियों में आवश्यकतानुसार मचान या सहारा देने की व्यवस्था करें।

4. सिंचाई एवं जल निकास

- खरीफ मौसम में वर्षा के कारण अतिरिक्त सिंचाई की आवश्यकता कम हो सकती है।
- खेत में पानी जमा होने से जड़ों में सड़न एवं अन्य रोगों का खतरा बढ़ सकता है।
- खेत में अतिरिक्त पानी जमा होने की स्थिति में मेड़/बेड बनाकर खेती करें।

5. खरपतवार नियंत्रण

- फसल की शुरुआती अवस्था में खरपतवार नियंत्रण पर विशेष ध्यान दें।
- समय-समय पर निराई-गुड़ाई करें।
- खरपतवार फसल के पोषक तत्व, पानी एवं प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं।
- आवश्यकता होने पर संबंधित फसल के लिए अनुशंसित खरपतवारनाशी का प्रयोग कृषि विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार करें। इसलिए 10-15 दिन में एक बार निराई-गुड़ाई अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए अवश्य करें।

6. पोषक तत्व प्रबंधन

- फसल की आवश्यकता के अनुसार संतुलित मात्रा में नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटैश का प्रयोग करें।
- जैविक खाद एवं कम्पोस्ट का उचित मात्रा में प्रयोग मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने में सहायक होता है।
- सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी होने पर मृदा परीक्षण एवं कृषि विशेषज्ञ की सलाह के आधार पर सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें।

8. रोग एवं कीट प्रबंधन

खरीफ मौसम में सब्जियों में रस चूसने वाले कीट, फल एवं तना छेदक, सफेद मक्खी, माहू तथा विभिन्न फफूंदजनित रोगों का प्रकोप हो सकता है।

- खेत की नियमित निगरानी करें।
- संक्रमित पत्तियों एवं पौधों को समय पर हटाएं।
- खेत में उचित हवा एवं प्रकाश का आवागमन बनाए रखें।
- कीट एवं रोग की सही पहचान के बाद ही अनुशंसित कीटनाशी/फफूंदनाशी का प्रयोग करें।
- रसायनों के प्रयोग से बचे जैविक कीटनाशी को उपयोग में लाएं।
- चिपचिपे प्रपंच तथा फेरोमेट ट्रेप को प्रयोग में लाएं।

9. तुड़ाई एवं फसल प्रबंधन

- सब्जियों की तुड़ाई उनकी उपयुक्त अवस्था पर करें।
- बहुत अधिक पकी या अत्यधिक छोटी सब्जियों की तुड़ाई से बचें अन्यथा अच्छी कीमत नहीं प्राप्त होता है।
- तुड़ाई के समय पौधों को अनावश्यक नुकसान न पहुंचाएं।
- सब्जियों को साफ एवं छायादार स्थान पर रखें तथा बाजार तक पहुंचाने में अनावश्यक देरी न करें।

महत्वपूर्ण बातें

खरीफ मौसम में सब्जियों की सफल खेती के लिए—

उन्नत बीज + उचित दूरी + अच्छा जल निकास + संतुलित पोषण + खरपतवार नियंत्रण + नियमित रोग-कीट निगरानी = बेहतर उत्पादन एवं गुणवत्ता।

किसान भाइयों के लिए संदेश

“खरीफ मौसम में सब्जियों की खेती करते समय जल निकास, स्वस्थ पौध, संतुलित पोषण और समय पर रोग-कीट प्रबंधन पर विशेष ध्यान दें।”